श्रम विभाग

## दिनांक 30 सितम्बर, 1985

सं० श्रों वि०/एफ बी०/139-85/40386.— चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राखे है कि मैं० जी० जी० टैक्सटाईल, 22-ए, एत० साई० टी०, फरीदाबाद, के श्रांतिक श्री श्रांतिल कृतार तथा उनके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दि ब्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947, की धारा 10 की उपकारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिविस्वना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिविस्वना सं० 11495-जी-श्रम- 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिवित्यम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादश्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या को विवादग्रस्त मामला है:—

क्या श्री अनिल कुमार की सेवाओं का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० म्रो०वि०/एफ०-डी०/139-85/40393.—चूंबि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० जी० जी० टैक्सटाईल, 22-ए, एन० म्राई० टी०, फरीराबाद, के श्रीमक श्री भगवती प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई म्रौधोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947, की घारा 10 की एपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिज्ञता सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरा, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त मा उससे सुसंगत या उस से सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिट अपते हैं जो कि उदत प्रवादकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री भगवती प्रसाद की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० स्रो०वि०/एफ०डी०/139-85/40400.--चूंिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० जी० जी० टैक्सटाईल, 22-ए, एन० स्राई० टी०, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राजबीर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक बिवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम- 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी०-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिस्थिम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदबाद, को जिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राजबीर की सेवार्थों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? जे० पी० रतन, उप सचिव ।